नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

उपलब्धियों के बारह वर्ष, चुनौतियों का नया दौर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को मंगलवार को 12 वर्ष पूर्ण हो गए हैं. 2014 में शुरू हुई यह यात्रा केवल सत्ता परिवर्तन की कहानी नहीं रही, बल्कि भारत की राजनीति, अर्थव्यवस्था, विदेश नीति और प्रशासनिक संस्कृति में व्यापक बदलावों का दौर भी रही है. तीन लगातार लोकसभा चुनावों में जीत हासिल कर नरेंद्र मोदी ने भारतीय लोकतंत्र में एक ऐसा राजनीतिक अध्याय लिखा है, जिसकी तुलना अब स्वतंत्र भारत के शुरुआती दशकों के लंबे नेतृत्व काल से की जा रही है.

सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने जनता का भरोसा बरकरार रखा है. इन 12 वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि सरकार ने विकास और कल्याण योजनाओं को सीधे आम नागरिक तक पहुंचाने का प्रयास किया. प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, जल जीवन मिशन और जनधन खातों जैसी योजनाओं ने करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है. डिजिटल भुगतान व्यवस्था में यूपीआई की सफलता ने भारत को दुनिया के अग्रणी डिजिटल देशों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है. आज भारत में होने वाले डिजिटल लेनदेन का स्तर कई विकसित देशों से भी आगे माना जाता है.

राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर भी सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए. जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का फैसला, राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होना, सीमावर्ती क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे का विस्तार तथा आतंकवाद और नक्सलवाद पर प्रभावी नियंत्रण सरकार की प्रमुख उपलब्धियों में गिने जाते हैं. हाल के वर्षों में रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता और 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसी सैन्य सफलताओं ने भी भारत की सामरिक क्षमता को नई पहचान दी है. आर्थिक क्षेत्र में भारत का दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है. राजमार्ग निर्माण की गति में वृद्धि, रेलवे और हवाई अड्डों का विस्तार तथा रिकॉर्ड स्तर पर बुनियादी ढांचा निवेश ने विकास को नई दिशा दी है. विश्व बैंक, आईएमएफ और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी भारत को वैश्विक विकास का प्रमुख इंजन मान रही हैं. फिर भी यह कहना जल्दबाजी होगी कि सभी चुनौतियां समाप्त हो गई हैं.

मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के सामने सबसे बड़ी चुनौती रोजगार सृजन की है. देश की युवा आबादी तेजी से बढ़ रही है और गुणवत्तापूर्ण रोजगार की मांग भी उसी अनुपात में बढ़ रही है. आर्थिक विकास दर को रोजगार सृजन से जोड़ना अब सरकार की प्राथमिक आवश्यकता है. जल संकट और पर्यावरणीय चुनौतियां भी आने वाले वर्षों में गंभीर मुद्दे बनने वाली हैं. अनेक राज्यों में भूजल स्तर लगातार गिर रहा है और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि तथा शहरी जीवन दोनों पर दिखाई देने लगा है. इसके साथ ही विनिर्माण क्षेत्र में निवेश बढ़ाना, वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं से निपटना और निर्यात क्षमता का विस्तार करना भी आवश्यक होगा. राजनीतिक दृष्टि से भी सरकार के सामने अपेक्षाओं का दबाव पहले से कहीं अधिक है. लगातार तीन कार्यकालों की सफलता ने जनता की उम्मीदों को बढ़ाया है. अब केवल योजनाओं की घोषणा नहीं, बल्कि उनके परिणामों का मूल्यांकन भी होगा.

12 वर्षों के इस पड़ाव पर कहा जा सकता है कि मोदी सरकार ने भारत की दिशा और गति दोनों को प्रभावित किया है. लेकिन विकसित भारत 2047 के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अगले दशक में रोजगार, जल सुरक्षा, कौशल विकास और समावेशी आर्थिक वृद्धि जैसे क्षेत्रों में निर्णायक प्रगति करनी होगी. उपलब्धियों का यह दशक महत्वपूर्ण रहा है, परंतु आने वाला समय इस बात का परीक्षण करेगा कि भारत अपनी नई आकांक्षाओं को किस हद तक वास्तविकता में बदल पाता है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, एक सहृदय जनतंत्रवादी

एचडी देवेगौड़ा

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि श्री नरेंद्र मोदी अब भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार सेवा करने वाले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री बन गए हैं. मेरी खुशी की वजह यह नहीं है कि उन्होंने सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री के पद पर रहने का पंडित जवाहरलाल नेहरू का कीर्तिमान तोड़ दिया. मैं इसलिए खुश हूँ कि उनकी यह उपलब्धि भारत की लोकतान्त्रिक विजय के बारे में बहुत कुछ कहती है. भारत ने न केवल अपना अस्तित्व बनाये रखा बल्कि पहले से समृद्ध भी हुआ है. यह एक शानदार सफलता की कहानी है और इस सफलता की कहानी में श्री मोदी का योगदान अद्वितीय और ऐतिहासिक है.

> श्री मोदी न केवल देश के कार्यकारी प्रमुख रहे हैं, बल्कि देश के मुख्य सलाहकार भी रहे हैं, जिन्होंने निरंतर और संवेदनशीलता के साथ सभी प्रकार के और सभी वर्गों के लोगों से संवाद किया है. मैं उनके रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' को कभी नहीं छोड़ता. मैं उनके उन पुरस्कारों की हमेशा सराहना करता हूँ, जिसमें महान उपलब्धि हासिल करने वालों को खोजकर सम्मानित किया जाता है. नेहरू के समय और उसके बाद के दौर की तुलना में, उन्होंने देश के कोने-कोने तक ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचने की कोशिश की है. कोई अन्य प्रधानमंत्री ऐसा नहीं है जिसने उनकी तरह तकनीक का इस्तेमाल किया हो. निस्वार्थ समर्पण के बिना ऐसा करना संभव नहीं है. श्री मोदी इसलिए सफल हैं क्योंकि वे हमेशा आत्म-चिंतन करते रहे हैं. उन्होंने खुद को लगातार कसौटी पर परखा है. मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें भरपूर ऊर्जा और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें ताकि वे कई और वर्षों तक, प्रधानमंत्री के रूप में कई कार्यकालों तक, अपना काम इसी तरह जारी रखें.

पंडित नेहरू 1952 तक गैर निर्वाचित प्रधानमंत्री रहे. उन्हें 1947 में असाधारण परिस्थितियों में, समान रूप से प्रतिभाशाली और समर्पित लोगों के बीच से चुना गया था. यह महात्मा गांधी का एक तरह का वीटो और जनता पर उनका नैतिक प्रभाव ही था, जिसने प्रधानमंत्री के तौर पर पंडित नेहरू के नामांकन को सुनिश्चित किया. 1952 के पहले आम चुनाव में उनके साथ महात्मा का आशीर्वाद और स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव था. उस समय कांग्रेस पार्टी का एकाधिकार था. उसे किसी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पड़ा. हालांकि आम चुनाव में 53 राजनीतिक दलों ने हिस्सा लिया, लेकिन उनकी मौजूदगी और प्रभाव बहुत कम था. उस समय से लेकर 2014 में जब श्री मोदी पहली बार और फिर 2024 में इस उच्च पद पर पहुंचे, तब तक भारत एक बहुत अलग राष्ट्र बन चुका था. आकार, विविधता, अर्थव्यवस्था और नागरिकों के विकास के मामले में यह लगभग पूरी तरह बदला हुआ था.

यह कहना बहुत विवेकपूर्ण नहीं है कि 2014 या 2024 की तुलना में 1952 में प्रधानमंत्री चुना जाना ज्यादा आसान था. यहां तक कि जब मैं 1996 में प्रधानमंत्री बना, तब तक परिस्थितियां, राजनीतिक मापदंड और मुकाबला पूरी तरह से बदल चुके थे. राष्ट्र अधिक सवाल पूछने वाला, अधिक जागरूक और अधिक परिपक्व हो चुका था. नेहरू-गांधी परिवार से बाहर के प्रधानमंत्रियों के पास ऐसा कोई चमकता हुआ आभामंडल नहीं था, जिस पर वे अपना दावा कर सकें. उनके पास आगे बढ़ने के लिए कोई विशेषाधिकार, खानदानी रसूख या किसी का संरक्षण नहीं था. श्री मोदी और स्वयं मेरे मामले में भी, हमारे पास वह सामाजिक और सांस्कृतिक पूंजी भी नहीं थी जो कई अन्य प्रधानमंत्रियों को मिली थी.

मैं ज़्यादा समय तक नहीं टिक पाया, मेरा कार्यकाल सिर्फ 11 महीने का था, लेकिन मैं सोचता हूँ कि श्री मोदी को कौन-सा दैवीय आशीर्वाद मिला है कि वे बिना थके लगातार शीर्ष पर बने हुए हैं—न तो उनमें थकान का कोई संकेत दिखता है और न ही उन्हें चुनने वाले लोगों में. पद पर रहते हुए उनकी सहनशक्ति और काम करने की क्षमता पंडित नेहरू से बिल्कुल अलग है.

आइए, पंडित नेहरू के समय से लेकर अब तक के कुछ दिलचस्प आँकड़ों पर नज़र डालें. ये उस बड़े बदलाव को दिखाते हैं जिसका मैंने जिक्र किया है- अगर सिर्फ राजनीतिक मुक़ाबले की बात करें, तो 1952 के चुनावों में मैदान में सिर्फ 53 पार्टियाँ थीं, जबकि 2024 में श्री मोदी को 2593 राजनीतिक पार्टियों का सामना करना पड़ा. नेहरू के समय में मतदाताओं की संख्या सिर्फ 17 करोड़ थी, जो 2014 तक बढ़कर 83 करोड़ हो गई. भारत की आबादी, जो 1952 में 34 करोड़ थी, आज 146 करोड़ से ज़्यादा है.

एक और दिलचस्प बात यह है कि पंडित नेहरू के मंत्रिमंडल में समुदायों की जनसंख्या के आकार या भारत की सांस्कृतिक और जातीय विविधता की झलक नहीं मिलती थी. यहाँ तक कि जब नेहरू प्रधानमंत्री के तौर पर अपने तीसरे और आखिरी कार्यकाल में थे, तब भी मंत्रिमंडल का गठन काफी असंतुलित लगता था. इसमें ज़्यादातर ऊंची जाति के पुरुष ही शामिल थे. पंडित नेहरू ने काका केलकर आयोग की रिपोर्ट को खारिज कर दिया था, जिसमें वास्तव में वंचित और पिछड़े वर्गों को आरक्षण देने की कोशिश की गई थी.

श्री मोदी वर्तमान में जिस मंत्रिमंडल की अध्यक्षता कर रहे हैं, वह शानदार रूप से विविधताओं से भरा है. इसमें 27 ओबीसी, 10 अनुसूचित जाति (एससी) और 5 अनुसूचित जनजाति (एसटी) के सदस्य हैं.

(लेखक राज्यसभा के सदस्य और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री हैं.)

दिल्ली डायरी

गिले-शिकवे दूर कर गलबहियां हुए इंडिया ब्लॉक के नेता

प्रवेश कुमार मिश्र

लगभग दो वर्षों के अंतर्द्वंद्व के बाद सिकुड़ते जनाधार के साथ इंडिया समूह की बैठक में शामिल हुए क्षेत्रीय क्षत्रपों ने भले ही आपसी बैर भाव को समाप्त कर गलबहियां करते हुए सार्वजनिक मंच से सार्थक संदेश देने का प्रयास किया हो लेकिन सच्चाई यह है कि अभी भी विभिन्न विषयों को लेकर मतभेद कायम है. चर्चा है कि जिस तरह से लगभग सभी क्षेत्रीय दलों ने अपने सिकुड़ते जनाधार से परेशान होकर कांग्रेसी अगुवाई को अनौपचारिक रूप से स्वीकार किया है उससे साफ है कि अब क्षेत्रीय दलों को भी भाजपा के खिलाफ किलाबंदी करने के लिए कांग्रेसी हाथ और मजबूत साथियों के साथ की जरूरत है. चर्चा यह भी है कि अब इंडिया समूह में शामिल छोटे दल कांग्रेस को आंख दिखाने के बजाय गलबहियां की रणनीति को महत्व देना आरंभ कर चुके हैं. हालांकि कांग्रेस भी समय व परिस्थिति को भांपकर आपसी विवाद पर पानी डालते हुए नई रणनीति के साथ आगे बढ़ने को तैयार दिख रही है.

डीएमके व आप की अगुवाई में तीसरे मोर्चे की सुगबुगाहट

इंडिया समूह बैठक से दूरी बनाकर डीएमके व आप के रणनीतिकारों ने देश के सामने तीसरे मोर्चे के रूप में एक नया राजनीतिक विकल्प देने की तैयारी आरंभ कर दी है. चर्चा है कि अपने अपने प्रभाव वाले राज्यों में कांग्रेस व भाजपा से सीधे टक्कर लेने वाले क्षेत्रीय दलों के नेताओं के बीच पर्दे के पीछे चर्चा जारी है. इसमें डीएमके ,आम आदमी पार्टी, वामदल, टीआरएस यानी बीआरएस, जन सुराज, ओवैसी की पार्टी के अलावा दक्षिण भारत और उत्तर पूर्व के छोटे-छोटे दलों को शामिल करने की बात हो रही है.

मध्यप्रदेश राज्यसभा चुनाव के लिए दिल्ली में भी मंथन : मध्यप्रदेश में तीन सीटों पर होने वाले राज्यसभा चुनाव में चार उम्मीदवार की मौजूदगी के बाद राजनीतिक गुणा-भाग भोपाल के अलावा दिल्ली में बैठे रणनीतिकार भी कर रहे हैं. चर्चा है कि कांग्रेसी रणनीतिकार अपने विधायकों को एकजुट रखने के लिए बहुस्तरीय रणनीति बनाकर लगातार संपर्क कर रहे हैं. यह भी कहा जा रहा है कि राहुल गांधी सीधे तौर पर कई विधायकों से बात कर चुके हैं. जबकि दूसरी ओर भाजपा अपने दो उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित करते हुए तीसरे उम्मीदवार के लिए दस कांग्रेसी विधायकों पर नजर लगाए हुए है. बिहार तर्ज पर मतदान के दौरान अनुपस्थित से लेकर वोट रद्द कराकर अंकगणित के आधार पर बढ़त हासिल करने की रणनीति भी बनाई जा रही है. दिल्ली में इस विषय को लेकर बहुस्तरीय चर्चा भी हो रही है. सबकी नजर कांग्रेसी रणनीतिकारों की अपने कुनबे को बचाने के तौर-तरीकों पर लगी हुई है.

बिखराव के साथ सिकुड़ गई टीएमसी

चुनावी हार और कुनबाई बिखराव के कारण कभी भाजपा के खिलाफ आक्रामक दिखने वाली टीएमसी इन दिनों अस्तित्व बचाने के संकट में उलझ गई है. जिस तरह से ममता बनर्जी व अभिषेक बनर्जी के नेतृत्व के खिलाफ उनके अपने चहेते विधायकों व सांसदों ने मोर्चाबंदी कर अलग राह अपना ली है उससे साफ है कि ममता के नेतृत्व वाली टीएमसी न सिर्फ कमजोर हो चुकी है बल्कि विघटन के राह पर भी बहुत आगे निकल गई है. हालांकि इस घटनाक्रम को टीएमसी की आंतरिक राजनीति का परिणाम बताकर भाजपाई नेता अपने को इससे अलग कर रहे हैं लेकिन दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में इस राजनीतिक हालात को शिवसेना के बिखराव की पटकथा से जोड़कर देखा जा रहा है. क्योंकि दिल्ली में टीएमसी सांसदों का भाजपा नेताओं की मौजूदगी में केन्द्रीय मंत्री के आवास पर मिलकर अलग गुट बनाने का निर्णय करना इस उलटफेर के हरेक परत से पर्दा उठा रहा है.

इस बार कमजोर मानसून के आसार

देशवासी बेसब्री से मानसून की राह देख रहे हैं. भारतीय मौसम विभाग ने पहले ही सामान्य से कम मानसून रहने की भविष्यवाणी की है, जो कुल मिलाकर 90 फीसदी बारिश का संकेत है. इसके लिए 'अल नीनो' फैक्टर को जिम्मेदार बताया जा रहा है. पिछले 2 वर्षों में मानसून अनुकूल रहने से 2024-25 में कृषि में 4.2 प्रतिशत तथा 2025-26 में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई.

> पिछले 2 वर्षों में मानसून अनुकूल रहने से 2024-25 में कृषि में 4.2 प्रतिशत तथा 2025-26 में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई. बताया जा रहा है कि खरीफ फसल पर मौसम का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन ठंड के दौरान नवंबर से जनवरी तक आने वाली रबी की फसल अल नीनो से प्रभावित होगी.

बताया जा रहा है कि खरीफ फसल पर मौसम का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन ठंड के दौरान नवंबर से जनवरी तक आने वाली रबी की फसल अल नीनो से प्रभावित होगी. क्योंकि वह मानसून को रोक देगा तथा शीतकाल के दिन भी सीमित रह जाएंगे. जहां तक खाद या उर्वरक का सवाल है, खरीफ मौसम के लिए उसकी मात्रा पर्याप्त बताई जाती है, लेकिन रबी मौसम में उसका अभाव महसूस किया जाएगा. होर्मुज की नाकाबंदी से रुकी रासायनिक खाद की आपूर्ति का असर तब देखा जाएगा. इससे दिसंबर-जनवरी में खाद्यान्न के दाम बढ़ सकते हैं. ऐसी स्थिति में क्या किया जाए, इस पर कृषि विशेषज्ञ विचार कर रहे हैं. वर्षा और खाद की कमी होने पर मिलेट (ज्वार, बाजरा, मका, रागी जैसा मोटा अनाज) दाल तथा तिलहन की पैदावार की जा सकती है. इन फसलों के लिए कम पानी व थोड़ा-सा खाद लगता है. इसके विपरीत धान, गेहूं व गन्ने के लिए अधिक सिंचाई व यूरिया की आवश्यकता पड़ती है. भारत ने पिछले वित्त वर्ष में 7.3 मीट्रिक टन दाल आयात की थी तथा 2025-26 में 16.9 मिलियन टन खाद्य तेल का आयात किया है. सरकार इस वर्ष मिलेट, दाल व तिलहन के उत्पादन को बढ़ावा दे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

वैभव को पिता का संरक्षण क्या यह है ओवर प्रोटेक्शन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इंसान कितना ही बड़ा क्यों न हो जाए, अपने माता-पिता की नजरों में बच्चा ही रहता है. माता प्यार-दुलार-संस्कार देती है, तो पिता संरक्षण करता है. वे लोग भाग्यवान हैं जिनके सिर पर माता-पिता का साया है. कहा गया है- मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव ! 10 आचार्य के बराबर 1 पिता और 10 पिता समान 1 माता. मां ईश्वर का दूसरा रूप है.'

हमने कहा, 'आज आप इतनी ज्ञानचर्चा क्यों कर रहे हैं? माता-पिता को कौन याद नहीं करता. जब किसी मराठी भाषी बच्चे को चोट लगती है तो वह कहता है- आई गं! जब हिंदी भाषी बच्चा किसी मुसीबत में फंसता है तो कहता है- अरे बाप रे! पिता रक्षा करता है, प्रोटेक्शन देता है. अब देखिए न, वैभव सूर्यवंशी जैसे विस्फोटक बल्लेबाज के साथ उसके पिता संजीव सूर्यवंशी भी श्रीलंका जा रहे हैं. इसके बाद वह उसके साथ आयरलैंड व इंग्लैंड भी जाएंगे. बीसीसीआई ने वैभव सूर्यवंशी के पिता को उसके साथ जाने की अनुमति प्रदान की है. वैभव का कुछ दिनों पहले इंडिया ए टीम के लिए चयन हुआ.

शीघ्र ही वह भारत की सीनियर टीम का हिस्सा भी बन जाएगा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जब पूरी टीम, कोच, मैनेजर सब एक साथ जा रहे हैं, तो वैभव के पिता को साथ में जाने की क्या जरूरत? उनकी औलाद तो वैसे ही फौलाद है, जो बहुत तेजी से रन बनाकर विपक्षी टीम के गेंदबाजों की सिट्टी-पिट्टी गुम कर देता है. लगातार सिक्सर पर सिक्सर मारता चला जाता है. सब मानते हैं कि भारतीय क्रिकेट को वैभव सूर्यवंशी के रूप में दूसरा सचिन तेंदुलकर मिल गया. यह 15 वर्ष का तूफान और भारत की शान है. उसके पिता को चाहिए था कि उसे अकेले जाने देते.'

हमने कहा, 'कुछ भी हो वैभव अभी बच्चा है, एडल्ट नहीं. उसके माता-पिता को उसकी फिक्र होना स्वाभाविक है. उसके खाने-पीने, रहने-सोने और स्वास्थ्य की चिंता पिता से ज्यादा कौन करेगा. विदेश के नए माहौल में पिता के साथ रहने से उसका हौसला बढ़ेगा.' पड़ोसी ने कहा, 'पक्षी का बच्चा भी उड़ना सीखने के बाद घोंसला छोड़ देता है. वैभव में पहले ही बहुत हौसला है. कहावत है-सिंह-बाज के पुत्र को झपट सिखावत कौन ! उसके पिता उसे ओवर प्रोटेक्शन दे रहे हैं. जिंदगी के महासागर में वह खुद ही लहरों के थपेड़े खाकर तैरना सीख जाएगा.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12284 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	4		5	
6			7		8		
9		10			11		
		12	13				
14	15						16
	17	18			19	20	
	21			22		23	
24							

ऊपर से नीचे

1. जो स्वाभाविक न हो, बनावटी 2. चेहरा, मुख, अग्रभाग 3. साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में पूर्ण हो, विदूषक, वेश्यागामी 4. पर्यंत, किसी वस्तु या कार्य की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति 5. असि, खंग, धारदार लंबा हथियार 8. जिसमें सार या तत्व हो, तत्वपूर्ण 10. प्याला (उर्दू) 13. पाचन क्रिया या पाचन शक्ति 15. केसर (उर्दू) 16. कोई कार्य पूर्ण करने के लिए निर्धारित समय 18. रहने की क्रिया या भाव, आचार-व्यवहार 20. शक्ति, सामर्थ्य 22. दरिद्र, विनीत, मजहब

बाएं से दाएं

1. आश्रित, जो किसी बात पर ही निर्भर हो 5. सचाई, यथार्थता, कोई ऐसी बात जो किसी विशेष अवस्था में वस्तुतः हुई हो 6. जायका, खाने-पीने से मुंह या जीभको होने वाला अनुभव 7. वह स्थान जहां सिक्के बनाए और ढाले जाते हैं 9. बहन का बेटा 11. प्रस्थित 12. बहुत बड़ा समुद्र 14. मौत, मृत्यु 17. ढांचा, कागज का पूरा ताव जो एक बार में मशीन पर छपता है 19. ताल देने का एक चमड़ा मढ़ा प्रसिद्ध बाजा 21. मार्ग, रास्ता 23. श्रीरामचंद्रजी के पुत्रों में से एक का नाम 24. तुरंत, फौरन

Solution 12283

ह	री	ति	मा		जी	व	न
ल		ह	रा	र	त		ज
वा	न	री		न		क	र
ई	ख		क	वा	य	द	
	शि	ला	न्या	स		ली	ख
सु	ख	द			भ	व	न
ल		ना		भ	या	न	क
ह	त्या		प	ट	ना		ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा, आनन्दायक रहेगा, अध्ययन के प्रति आकस्मिक यात्रा का योग है, आर्थिक संसाधनों में सामान्य सुधार होगा, पारिवारिक समस्याओं से कष्ट होगा, वर्ष के मध्य में राजनीति के क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है, लाभप्रद समाचार मिलेगा, वर्ष के अन्त में मान सम्मान के प्रति सचेत रहें, आर्थिक लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम के बाद आंशिक लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आर्थिक संसाधनों में सुधार होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक मित्र द्वारा परिवर्तन होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक व्यवधान का सामना करना पड़ सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, एकांतप्रिय, परोपकारी, तथा दृढ़ निश्चयी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, व्यापार नौकरी दोनों में सफलता प्राप्त होगी, जन्म स्थान से दूर रहकर अपनी उन्नति करेगा, मित्रों की संख्या अधिक रहेगी, किन्तु वास्तविक मित्रों का अभाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

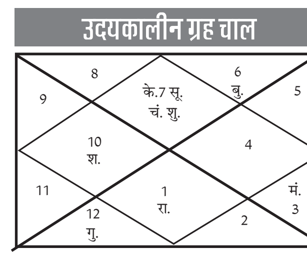

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण दशमीं बुधवासरे रात 7/34, रेवती नक्षत्रे रात 3/58, सौभाग्य योगे रात 12/19, वणिज करणे सू.उ. 5/14, सू.अ. 6/46, चन्द्रचार मीन रात 3/58 से मेष, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण दशमीं को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से जौ, चना, तिल, मूँग, मोठ, के भावों में मंदी होगी, सरसों, वनस्पति घी, गुड़ शक्कर, के भाव में घटा-बढ़ी होगी, जीरा, धनियां, लालमिर्च, के भाव में तेजी का योग है. भाग्यांक 7010 है.

मेष- कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, पारिवारिक आयोजन से प्रसन्नता रहेगी, धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में मानसिक संतुष्टि रहेगी.

वृषभ- जोखिम के कार्यों से दूर रहना लाभकारी है, राजकीय सहयोग रहेगा, अभीष्ट कार्यों की सिद्धि होगी, शत्रु वर्ग पराजित होगा, स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

मिथुन- जल्दबाजी में लिये गये फैसले बदलना पड़ सकते हैं, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च होगा, स्थाई संपत्ति अथवा अन्य साधनों में वृद्धि होगी.

कर्क- धीमी गति के बावजूद कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता मिल सकती है, आय से अधिक खर्च होगा, दैनिक कार्यों में अवरोध संभव, मित्रों से मतभेद हो सकता है.

सिंह- नया घर खरीदने की स्थिति बन सकती है, शारीरिक सुख तथा मानसिक प्रसन्नता रहेगी, मनोरंजन, भ्रमण आमोद प्रमोद, के साधनों में वृद्धि होगी.

कन्या- नई जिम्मेदारी आने से आप परेशान हो सकते हैं, विवादों से बचने चाहिये, नवीन वस्त्राभूषण उपहार आदि की प्राप्ति होगी, अतिथि आगमन का योग है.

तुला- युवाओं को बेहतर सफलता मिलेगी, श्रम एवं प्रयत्न से लाभ होगा, अनावश्यक विवादों को टालें, वाणी में संतुलन बना रहेगा.

वृश्चिक- कार्यक्षेत्र में विपरीत हालात का सामना करना पडेगा, नई जिम्मेदारी से आप परेशान हो सकते हैं, नवीन निर्माण कार्य में प्रगति होगीं.

धनु- दिखावे के चलते कर्ज लेना पड़ सकता है, किसी की सिफारिश से अटके कार्य बनेंगे, नये संपर्कों से प्रगाढ़ता आयेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

मकर- नाराज चल रहे लोगों को मनाना पडेगा, यात्रा से लाभ प्राप्त होगा, पुराने कार्य बनेंगे, संपत्ति विवादों का सरलता से समाधान होगा.

कुम्भ- परिणय की चर्चाओं में सफलता मिलेगी, अटकी योजनायें फिर से शुरू हो सकती हैं, स्त्री पक्ष पर विशेष खर्च होगा, व्यवहार कुशलता से सामाजिक कार्य बनेंगे.

मीन- दौड़धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, मित्रों से कार्यक्षेत्र में सहयोग मिलेगा, खानपान की अनियमितता रहेगी, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

SUDOKU 7416

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7415

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7